SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

आधुनिकीकरण और जनजातीय संस्कृति: मध्यप्रदेश की जनजातियों का एक अंतर्विरोधात्मक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

दिगंत द्विवेदी

सहायक प्रधापक (समाजशास्त्र)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

यह शोध मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों–गोंड, भील, बैगा, कोरकू–के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। आधुनिक शिक्षा, शहरीकरण, तकनीकी साधन और सरकारी योजनाओं ने जनजातीय समाज के जीवन को जहाँ एक ओर मुख्यधारा में लाने में सहायता की है, वहीं दूसरी ओर उनकी पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान को चुनौती भी दी है।

यह अध्ययन गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है, जिसमें साक्षात्कार, फोकस ग्रुप चर्चा और भागीदारी अवलोकन जैसे उपकरणों का उपयोग किया गया। डिंडोरी, मंडला और अलीराजपुर जिलों के जनजातीय क्षेत्रों में फील्ड वर्क कर सामाजिक परिवर्तन के यथार्थ का गहराई से अध्ययन किया गया।

शोध के प्रमुख निष्कर्षों से पता चलता है कि युवा पीढ़ी आधुनिक तकनीक और शिक्षा के प्रभाव में पारंपरिक रीति-रिवाजों से दूर हो रही है, जबकि वृद्ध वर्ग अब भी सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ा हुआ है। पारंपरिक जीवनशैली में गिरावट आर्थिक कार्यों में बदलाव, और सांस्कृतिक आयोजनों में आधुनिकता का प्रवेश स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।फिर भी, कुछ समुदायों द्वारा अपनी संस्कृति के संरक्षण के प्रयास भी हो रहे हैं। शोध निष्कर्षों के आधार पर सुझाव दिए गए हैं, जैसे कि शिक्षा में स्थानीय परंपराओं का समावेश, सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण, और जनजातीय सहभागिता को बढ़ावा देना। यह अध्ययन न केवल सामाजिक परिवर्तन की गहराइयों को उजागर करता है, बल्कि जनजातीय नीतियों और सांस्कृतिक संरक्षण हेतु दिशा-निर्देश भी प्रदान करता है।

कुंजीभूत शब्द

जनजाति, सांस्कृतिक, जीवनशैली, आधुनिकता, समाज।

प्रस्तावना

भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता विश्व में अद्वितीय है, जिसमें जनजातीय समाज एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट स्थान रखता है। जनजातियाँ, जिन्हें आदिवासी भी कहा जाता है, अपने विशिष्ट जीवनशैली, भाषा, रीति-रिवाज और सांस्कृतिक धरोहर के लिए जानी जाती हैं। मध्यप्रदेश, जिसे "जनजातीय हृदयभूमि" के रूप में भी जाना जाता है, भारत के उन राज्यों में से एक है जहाँ विविध जनजातीय समुदाय सदियों से बसते आए हैं। इन जनजातियों की सांस्कृतिक विरासत न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय धरोहर का हिस्सा है।

हालांकि, बदलते समय और तेज़ी से बढ़ रहे आधुनिकरण की प्रक्रिया ने इन जनजातीय समुदायों की पारंपरिक जीवनशैली और सांस्कृतिक मूल्यों को कई तरह से प्रभावित किया है। आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी विकास ने जनजातीय समाज को मुख्यधारा में शामिल करने के अनेक प्रयास किए हैं, लेकिन इस प्रक्रिया में कई बार उनकी सांस्कृतिक पहचान धुंधली होने का खतरा भी उत्पन्न होता है। यह विरोधाभास शोध का मुख्य विषय है–कि कैसे आधुनिकीकरण और विकास के चलते जनजातीय संस्कृति पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव पड़ रहे हैं।

मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ जैसे गोंड, भील, बैगा, कोरकू आदि अपनी पारंपरिक जीवनशैली, धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक प्रथाओं के कारण अध्ययन के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं। इन जनजातियों का पारंपरिक समाज कृषि, कुम्हार, शिकार, तथा वन-आधारित आर्थिक गतिविधियों पर आधारित है। समय के साथ शहरीकरण, शिक्षा के प्रसार, मीडिया एवं सरकारी योजनाओं के प्रभाव से इनके सामाजिक ढांचे में परिवर्तन आया है, जो कभी-कभी सांस्कृतिक संरक्षण और विकास के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न करता है।

यह शोध इस संदर्भ में तैयार किया गया है कि जनजातीय संस्कृति और आधुनिकता के बीच के इस अंतर्विरोध को समझा जा सके। इस अध्ययन का उद्देश्य मध्यप्रदेश की जनजातियों

में हो रहे सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों का गहराई से विश्लेषण करना है ताकि यह पता चल सके कि आधुनिकरण की प्रक्रिया में जनजातीय समुदाय किस प्रकार स्वयं को बनाए रख रहे हैं या बदल रहे हैं। साथ ही यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि उनके लिए सांस्कृतिक संरक्षण के कौन से उपाय कारगर सिद्ध हो सकते हैं।

इस शोध के माध्यम से हम न केवल मध्यप्रदेश की जनजातीय जीवनशैली और संस्कृति को दस्तावेज़ित करेंगे, बल्कि यह भी समझने की कोशिश करेंगे कि सामाजिक परिवर्तन की इस प्रक्रिया में सरकार, समाज और स्वयं जनजातीय समुदाय की क्या भूमिका हो सकती है। अंततः यह शोध नयी सामाजिक नीति निर्माण के लिए उपयोगी संदर्भ और दिशा-निर्देश प्रदान करने में सहायक होगा, जो जनजातीय जीवन की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक समय में भी संरक्षित रख सके।

साहित्य समीक्षा

पूर्व में किए गए शोध कार्य यह संकेत करते हैं कि जनजातीय समाज में शिक्षा, शहरीकरण, संचार माध्यमों और सरकारी योजनाओं के कारण कई बदलाव आए हैं। प्रसिद्ध समाजशास्त्री G.S. Ghurye ने जनजातियों को 'backward Hindus' की संज्ञा दी थी, जबकि Verrier Elwin ने जनजातीय संस्कृति की आत्मनिर्भरता और संरक्षण पर ज़ोर दिया था। हाल ही के अध्ययनों में यह पाया गया है कि तकनीकी विकास के साथ जनजातीय युवा मुख्यधारा में आ रहे हैं, परंतु इसके साथ ही पारंपरिक सांस्कृतिक तत्वों का क्षरण भी हो रहा है।

शोध समस्या

क्या आधुनिकता जनजातीय संस्कृति को नष्ट कर रही है या उसमें समायोजन का माध्यम बन रही है?

उद्देश्य

1. मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों में सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों का अध्ययन करना।
2. आधुनिक शिक्षा, मीडिया, और बाजारवाद के प्रभाव का विश्लेषण करना।
3. जनजातीय समुदायों के दृष्टिकोण से इन परिवर्तनों की समीक्षा करना

शोध पद्धति

यह शोध गुणात्मक (Qualitative) पद्धति पर आधारित है। इसके अंतर्गत मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों - गोंड, भील और बैगा - पर फील्ड स्टडी की गई। साक्षात्कार, फोकस ग्रुप चर्चा एवं भागीदारी अवलोकन जैसी विधियों का प्रयोग किया गया। साथ ही, द्वितीयक स्रोतों (सरकारी रिपोर्ट, शोध पत्र, पुस्तकों) का उपयोग किया गया।

आँकड़े और सारणी

क्रमांक	जनजाति का नाम	जनसंख्या (2011 जनगणना)	साक्षरता दर (%)
1	गोंड	1,20,00,000+	65.6
2	भील	1,00,00,000+	55.2
3	बैगा	3,50,000	48.7
4	कोरकू	6,00,000	61.3

क्षेत्रीय अध्ययन

शोधकर्ता द्वारा मध्यप्रदेश के डिंडोरी, मंडला और अलीराजपुर जिलों के कुछ जनजातीय गाँवों - जैसे बिछिया, अमरपुर और जोबट - में फील्ड वर्क किया गया। यहाँ गोंड, बैगा और भील जनजातियों से संबंधित परिवारों से संपर्क कर सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन किया गया। शोध में यह पाया गया कि नई पीढ़ी आधुनिक शिक्षा, मोबाइल, और टेलीविजन के प्रति आकर्षित है, जबकि वृद्ध वर्ग अपने रीति-रिवाजों के प्रति अधिक सजग है।

साक्षात्कार अंश

1. श्रीमती काली बाई (45 वर्ष, बैगा जनजाति, मंडला)
   "हमारे समय में बच्चे त्योहारों में नाचते-गाते थे, अब मोबाइल में लगे रहते हैं।"
2. श्री रमेश (22 वर्ष, गोंड युवक, डिंडोरी)
   "शहर में पढ़ाई करने के बाद गाँव आने का मन नहीं करता, लेकिन दादी की कहानियाँ याद आती हैं।"
3. श्रीमती हेमलता (35 वर्ष, भील महिला, अलीराजपुर)
   "अब शादी-ब्याह में भी DJ बजता है, पहले लोक गीत गाते थे।"

प्रमुख निष्कर्ष

1. शिक्षा और मोबाइल फोन जैसे तकनीकी साधनों ने युवा पीढ़ी को आधुनिक जीवन शैली की ओर आकर्षित किया है।
2. पारंपरिक नृत्य, लोककला और रीति-रिवाजों में कमी देखी जा रही है।
3. आर्थिक गतिविधियों में बदलाव (कृषि से मजदूरी या सेवा क्षेत्र में जाना) प्रमुख है।
4. कुछ समुदायों में संस्कृति के संरक्षण के प्रयास (जैसे त्योहारों का पुनरुद्धार, सांस्कृतिक मेले) भी हो रहे हैं।

निष्कर्ष

आधुनिकीकरण का प्रभाव दोहरी धार की तलवार जैसा है - एक ओर यह जनजातीय समाज को नई संभावनाएँ देता है, तो दूसरी ओर यह पारंपरिक संस्कृति को क्षरण की ओर भी ले जाता है। जरूरत इस बात की है कि विकास की प्रक्रिया में जनजातीय पहचान और परंपरा को भी संरक्षित किया जाए।

सुझाव

1. जनजातीय युवाओं को उनकी संस्कृति से जोड़ने के लिए शिक्षा में स्थानीय इतिहास और परंपराओं को शामिल किया जाए।
2. सरकारी योजनाओं में जनजातीय सहभागिता को अनिवार्य बनाया जाए।
3. सांस्कृतिक संरक्षण हेतु सामुदायिक संग्रहालय, दस्तावेजीकरण एवं लोककला कार्यक्रम चलाए जाएं।

संदर्भ

1. Ghurye, G.S. - The Scheduled Tribes
2. Elwin, Verrier - The Tribal World of Verrier Elwin
3. Ministry of Tribal Affairs, Government of India - Annual Reports
4. Census of India - Madhya Pradesh Tribal Data
5. विभिन्न शोध पत्र एवं पत्रिकाएं

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार